विदर्भ स्वाभिमान

www.vidarbhswabhiman.com

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189

❖ अमरावती, 2-8 अप्रैल 2026 ❖वर्ष :16 ❖अंक- 46 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य-4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027❖डाक : शुक्रवार-शनिवार MAHHIN/2010/ 43881

बाबूजी के आदर्श विचार

जीवन की खुशियां

ज़ीवन में प्रभु सदा तकलीफें देते रहने के बाद मानव सदा उन्हें याद करता है. लेकिन कई बार प्रैक्टिकल जीवन में भी आप के पास अगर कुछ है तो ही लोग जुड़ते हैं लेकिन मेरे प्रभु सदा ऐसे को अपनाते हैं, जिसे दुनिया ठुकराती है. इसके बाद भी कितने अभागे वे होते हैं, जो प्रभु को बिसराते हैं. जीवन में सदा प्रभु याद को याद रखें, वे भूलने के बाद सब कुछ समाप्त होकर केवल राम नाम सत्य ही रह जाता है.

करोड़ों छोड़कर बन गए संत

नई दिल्ली- जब कोई पैसा कमाने लगता है तो उसे लगता है कि ज्यादा से ज्यादा कमा लिया जाए. लगभग हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी संपत्ति बढ़ती जाए. इसीलिए दुनिया के बड़े-बड़े अरबपति कारोबारी अपना कारोबार रोकते नहीं, बल्कि उसे और बढ़ाते हैं. पर कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें कारोबार और दौलत बढ़ाने से संतुष्टि और आंतरिक खुशी नहीं मिलती. इसलिए वे अपनी संपत्ति को छोड़, अध्यात्म का रास्ता चुनते हैं. दुनिया में ऐसे कई उदाहरण हैं. वहीं भारत में भी कुछ लोगों ने ऐसा किया है. यहां हम आपको ऐसे ही दो व्यक्तियों के बारे में बताएंगे, जिन्होंने अपनी अरबों की संपत्ति छोड़ संत बनकर सादगी और अध्यात्म का रास्ता चुना.दिल्ली के प्लास्टिक कारोबारी भंवरलाल दोशी को आज भव्य रत्न महाराज के नाम से जाना जाता है. अब से 11 साल पहले सन 2015 में उन्होंने 600 करोड़ रुपये की संपत्ति को छोड़कर संत बनने का फैसला किया था. मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार उन्हें 'प्लास्टिक और केमिकल्स किंग' कहा जाता था.लेकिन 1982 से आध्यात्मिकता ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया और वे जैन शास्त्रों का अध्ययन करने लगे.

भगवान महावीर के संदेश सदा हैं प्रासंगिक

युद्ध नहीं बल्कि शांति से ही मिल सकता है विश्व को सुकून, युद्ध केवल मानवीय बर्बादी करता है

क़्या हिंसा अथवा युद्ध ही प्रगति का मार्ग हो सकता है, क्या कलह के बीच कोई सुकून की नींद सो सकता है, इस सवाल का जवाब सदा ना में ही रहेगा. लेकिन आज भगवान महावीर के जिन सिद्धांतों को जीवन तथा मानवीय प्रगति का माध्यम बनाया जाना चाहिए था, जिससे पूरे विश्व में शांति और प्रगति की राह आसान होती थी लेकिन दुर्भाग्य कि कोई सत्ता के लिए तो कोई साम्राज्य विस्तार के लिए विश्व पर युद्ध थोप रहा है. इसमें भी सबसे बड़ी बिडंबना यह होती है कि युद्ध का दंश देश के सैनिकों के साथ ही ऐसे हजारों निरपराध लोग झेलते हैं, जिनका उक्त बातों से कोई लेना देना नहीं है.

मानवता युद्ध से सदा ही आहत होती रही है लेकिन प्रभु की सबसे अनुपम रचना के रूप में जिस मानव का उल्लेख किया जाता है, वह अपने विनाश का कारण स्वयं क्यों बनता जा रहा है, यह सोच के बाहर है. आने वाली पीढ़ियों को हम क्या देने वाले हैं. यह सबसे बड़ा सवाल है. अहिंसा केवल कर्म से नहीं बल्कि वाणी और विचारों में भी होती है. कई बार तो हिंसा से भी खतरनाक हमारे शब्द होते हैं, जो कभी भुलाए नहीं जाते हैं. इससे बड़ी हिंसा नहीं हो सकती है. भगवान महावीर स्वामी ने तो शब्दों से भी कभी हिंसा नहीं करने का संदेश समूचे विश्व को दिया है. लेकिन आज जब विश्व में सर्वत्र हथियारों की होड़ मची है, अलग-अलग कारणों से युद्ध शुरू हैं, ऐसे समय भगवान महावीर के शांति के संदेश की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है.

मानव को प्रकृति ने बहुत दिया है, शब्द कम पड़ सकते हैं लेकिन हमने हवा को दूषित किया है, पेड़ों को काटा है, दादा-परदादाओं की उस व्यवस्था को भी प्रभावित किया है, जिसमें पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने की स्थायी व्यवस्था थी और किसी को प्यासा नहीं रहना पड़ता था. आज लाखों लोगों को पानी नहीं मिल रहा है. वहीं लाखों लीटर पानी घर साफ करने तथा गाड़ियों को धोने पर बर्बाद हो रहा है. जब दुनिया हथियारों की भाषा बोल रही है, उस समय भगवान महावीर के शांति,अहिंसा जैसे गुण ही इंसान को तारने की ताकत रखते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान

सुदर्शन गांग,बडनेरा

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

गलत लोगों में व्यक्त किया विश्वास तो घातक होगा

धर्म आस्था का विषय होता है. लेकिन हमारा जो काम है, उसके साथ न्याय नहीं करते हुए भोंदूबाजी में अगर हम विश्वास करेंगे तो निश्चित तौर पर अशोक खरात जैसे लोग पैदा होंगे. वह अकेले दोषी नहीं है, दोषी वह लोग भी हैं, जिन्होंने अपनी बुद्धि को गिरवी पर ऐसे बाबाओं के चरणों में सब कुछ न्योछावर करते समय लोकलाज तथा बाकी बातों का ध्यान नहीं रखा. आज तक इस तरह की सैकड़ों घटनाएं होने के बाद भी अगर हम पढ़े-लिखे अनपढ़ बने हैं तो इसे क्या कहा जाए.

भारतीय समाज में धर्म और अध्यात्म की परंपरा सदियों पुरानी है, जो श्रद्धा, संस्कार और नैतिक मूल्यों पर आधारित रही है। यह परंपरा समाज को दिशा देने और जीवन को संतुलन प्रदान करने का कार्य करती आई है। लेकिन दुर्भाग्यवश, इसी आस्था का दुरुपयोग करते हुए कुछ तथाकथित बाबा और गुरु धर्म के नाम पर अंधविश्वास और ढोंग का बड़ा कारोबार खड़ा कर चुके हैं। कुछ स्वार्थियों के कारण ही जहां धर्म बदनाम हो रहा है, वहीं दूसरी ओर जिस तरह से योजनाबद्ध तरीके से यह किया जा रहा है, इसका समर्थन नहीं किया जा सकता है. इतना तय है कि जब स्वार्थी बाबाओं को सत्ता का साथ मिलता है तो क्या-क्या धत्कर्म करते हैं, इसका उदाहरण अशोक खरात है. ये स्वयंभू धार्मिक नेता लोगों के भय, असुरक्षा और निजी समस्याओं का फायदा उठाते हैं। चमत्कार, तंत्र-मंत्र और दैवी शक्तियों के नाम पर वे लोगों पर मानसिक प्रभाव स्थापित करते हैं और धीरे-धीरे उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि कई मामलों में इन्हें राजनीतिक संरक्षण और सामाजिक समर्थन भी मिलता है, जिससे इनके खिलाफ कार्रवाई कठिन हो जाती है।देश में पहले भी कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं, जहां प्रभावशाली गुरुओं ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर एक बड़ा अनुयायी वर्ग तैयार किया। उनके साथ राजनेताओं, उद्योगपतियों और प्रभावशाली लोगों की निकटता ने उन्हें और अधिक ताकत दी। परिणामस्वरूप, गंभीर आरोपों के बावजूद सच्चाई पूरी तरह सामने नहीं आ सकी। हाल ही में सामने आया नाशिक का अशोक खरात प्रकरण इसी खतरनाक प्रवृत्ति का ताजा उदाहरण है। यह मामला दिखाता है कि कैसे धर्म और अध्यात्म की आड़ में लोगों को पहले भरोसे में लिया जाता है, फिर उनकी आस्था का उपयोग कर उन पर मानसिक नियंत्रण स्थापित किया जाता है, और अंततः आर्थिक व यौन शोषण तक की घटनाएं सामने आती हैं।

यह केवल किसी एक व्यक्ति की गलती नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक समस्या है। इसके पीछे अक्सर एक पूरा तंत्र काम करता है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हित जुड़े होते हैं। ऐसे में जरूरत है कि समाज जागरूक बने, अंधविश्वास से दूर रहे और तर्क व विवेक को प्राथमिकता दे। धर्म श्रद्धा का विषय होना चाहिए, अंधश्रद्धा का विषय कदापि नहीं. साथ ही स्वयं माया मोह में उलझे रहने वाले जब माया-मोह से दूर रहने की सलाह भक्तों को देते हैं, इससे बड़ा मजाक क्या हो सकता है. सरकार और प्रशासन को भी चाहिए कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई करें और दोषियों को किसी भी प्रकार का संरक्षण न मिले। वहीं समाज को भी यह समझना होगा कि सच्चा धर्म कभी शोषण की अनुमति नहीं देता। आस्था व्यक्तिगत हो सकती है, लेकिन उसका अंधानुकरण समाज के लिए घातक साबित हो सकता है. लोगों विशेष रूप से महिलाओं को भी समझदारी का परिचय देना चाहिए. खरात के पास जाने वाले कोई सामान्य नहीं, बल्कि कई महत्वपूर्ण पदों पर भी हैं. सतर्कता जरूरी है.

आदिवासियों के जीवन में अंधेरा ही है

क्षेत्र में करोड़ों रूपए खर्च के बाद भी मेलघाट के बच्चों का भविष्य कब संवरेगा, यह कोई नहीं जानता है. यहां पर जिला परिषद विद्यालयों में शिक्षकों की कमी के कारण शैक्षकि अंधेरा कब मिटेगा, यह कोई नहीं जानता है. यह जिले का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि विकास के मामले में लगातार राजनीति बढ़ने के कारण जनसमस्याओं की बजाय नेताओं में अहंकार ही जिले का पतन कर रहा है. 150 घुमंतुओं के सामने जहां शहर तथा जिला प्रशासन हतबल हो गया है, वहीं व्यापारी चिल्लाकर परेशान हो गए हैं लेकिन सर्वत्र लाचारी दिखाई दे रही है. मेलघाट तो समस्याओं की खान है. विधायक केवलराम काले द्वारा लगातार किया जा रहा प्रयास कितना असर दिखाता है, इस पर निगाहें लगी हैं. केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा आदिवासी बहुल क्षेत्रों के जीवनस्तर को ऊंचा उठाने, उन्हें मुख्य धारा में शामिल करने के लिए तमाम प्रयास करने के बाद भी प्रशासनिक लापरवाही के कारण इन क्षेत्रों की समस्याएं खत्म नहीं हो रही है. आजादी के 7 दशक से अधिक समय तक जहां कई गांवों में बिजली नहीं पहुंच पाई है, वहीं दूसरी ओर जिला परिषद विद्यालयों के साथ ही अन्य विद्यालयों में शिक्षकों के अभाव के कारण आदिवासी बच्चों का शैक्षिक जीवन अंधेरे में आ गया है. इसकी शिकायत के बाद भी समुचित ध्यान

विदर्भ स्वाभिमान

www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

नहीं दिया जा रहा है. सवाल यह है कि शिक्षा जैसे गंभीर विषय के मामले में इस तरह की लापरवाही का समर्थन नहीं किया जा सकता है. प्रशासन में आखिर संवेदनशीलता कब आएगी, इसका भी विचार किया जाना चाहिए.

जिले के आदिवासी बहुल मेलघाट क्षेत्र की समस्याएं खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं. यहां बड़े पैमाने पर जिला परिषद विद्यालयों में शिक्षकों का पद रिक्त रहने के कारण शैक्षिक अंधेरा आदिवासी छात्रों के विकास का दुश्मन बना हुआ है. दुर्गम मेलघाट क्षेत्र के धारणी पंचायत समिति अंतर्गत जिला परिषद स्कूलों में शिक्षकों की भारी कमी से शिक्षा व्यवस्था प्रभावित हो रही है. इस समस्या का शिक्षा मंत्री से तत्काल निराकरण करने की गुहार लगाई जा रही है.धारणी तहसील में शिक्षकों के 701 स्वीकृत पदों में से केवल 403 भरे हैं, जबकि 298 पद लंबे समय से रिक्त हैं. इसमें मख्याध्यापक, विज्ञान व भाषा शिक्षक और केंद्र प्रमुख के पद भी शामिल हैं. शिक्षकों की कमी के कारण कई स्कूलों में अतिरिक्त भार के साथ काम चल रहा है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा है. कई विद्यालयों में शिक्षकों के अभाव में छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है.

छात्रों का शैक्षणिक स्तर गिर रहा है. मामले को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्र के विधायक काले ने सभी रिक्त पदों पर तुरंत भर्ती और भविष्य के लिए स्थायी समाधान की मांग की है. इस पर केवलराम काल ने राज्य के शिक्षा मंत्री दादा भूसे से तत्काल भर्ती की मांग की है.मेलघाट में बड़े पैमाने पर शिक्षकों के पद रिक्त हैं, इससे आदिवासी छात्रों का शैक्षिक भविष्य अंधेरे में हैं. सभी रिक्त पदों पर तत्काल भर्ती करने का आग्रह शिक्षा मंत्री दादा भसे से की है. इसका क्या असर पड़ता है यह तो आने वाला समय बताएगा लेकिन दर्भाग्य ही कहना होगा कि जहां शिक्षा के माध्यम से ही व्यवस्था बदली जा सकती है, आदिवासियों के जीवन को उजालामय किया जा सकता है.

भक्त शिरोमणि हैं केसरीनंदन हनुमानजी

हनुमान जन्मोत्सव पर विशेष

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता हैं मारोती नंदन

हनुमान जन्मोत्सव हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र और प्रेरणादायक पर्व है, जो भगवान हनुमान के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है. यह पर्व चैत्र माह की पूर्णिमा को विशेष रूप से पूरे भारत में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है. हनुमान जी को शक्ति, बुद्धि, निष्ठा और समर्पण का प्रतीक माना जाता है.हनुमान जी, राम के परम भक्त थे और रामायण में उनका योगदान अतुलनीय है. उन्होंने अपने अद्भुत पराक्रम, साहस और बुद्धिमत्ता से असंभव कार्यों को संभव बनाया. चाहे माता सीता की खोज हो या लंका दहन, हर कार्य में उनकी अटूट भक्ति और समर्पण झलकता है.हनुमान जी को 'संकटमोचन' भी कहा जाता है, क्योंकि वे अपने भक्तों के सभी कष्टों को दूर करते हैं. उनका चरित्र हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति, निस्वार्थ सेवा और दृढ़ संकल्प से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है.हनुमान जन्मोत्सव केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आत्मबल, अनुशासन और सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देने वाला दिन है. इस दिन लोग अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और जीवन में अच्छे कर्म

करने का संकल्प लेते हैं.इस दिन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन और हनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है.

भक्त व्रत रखते हैं और हनुमान जी को सिंदूर, चमेली का तेल और लड्डू अर्पित करते हैं. कई स्थानों पर शोभायात्राएं और धार्मिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं. स्वयं प्रभु श्रीराम ने हनुमानजी को भरत सम भाई की उपमा दी है. यही कारण है कि कलयुग में हनुमानजी की भक्ति निर्मल भाव से हो तो तत्काल असर दिखाती है. अमरावती ही नहीं तो समूचे भारत में ऐसा कोई गांव नहीं है, जहां हनुमानजी का छोटा-बड़ा मंदिर नहीं है. कलयुग के देवता के रूप में वे अजरामर हैं. कहा जाता है कि जहां भी प्रभु श्रीराम की कथा होती है, हनुमानजी किसी भी रूप में वहां पहुंचते हैं. हनुमान जी का जीवन हमें सिखाता है कि विनम्रता और सेवा भावना ही सच्ची महानता है. उन्होंने अपनी अपार शक्ति के बावजूद कभी अहंकार नहीं किया और सदैव प्रभु राम की सेवा में समर्पित रहे. आज के समय में, जब समाज में स्वार्थ और अहंकार बढ़ रहा है, हनुमान जी का आदर्श हमें सही मार्ग दिखाता है.हनुमान जन्मोत्सव हमें अपने जीवन में साहस, भक्ति और सेवा की भावना को अपनाने की प्रेरणा देता है. यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि सच्ची शक्ति बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक होती है, जिसे सही दिशा में लगाकर हम जीवन को सफल और सार्थक बना सकते हैं. हनुमानजी जैसी निर्मल भक्ति जीवन को तारने का काम करती है. हनुमान जन्मोत्सव की सभी भाविकों और हनुमानजी भक्तों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान

सुधीर महाजन,इंदौर

विदर्भ स्वाभिमान

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com,rni. no MAHHIN/2010 43881

जिद, निरंतरता और जनसेवा की संगम हैं नवनीत राणा

6 अप्रैल को जन्मदिन पर विशेष, अमरावती का नाम राष्ट्रीय स्तर पर सदा जिन्होंने चमकाया,हिंदुत्व को समर्पित भाजपा नेत्री हैं

अमरावती जिले की शान को जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया है और सांसद के रूप में अमरावती ही नहीं तो समूचे देश में सदा विभिन्न विषयों को लेकर आक्रामक रहने तथा बेलोरा हवाई अड्डे सहित करोड़ों के विकास कामों के साथ ही महिलाओं , किसानों , दिव्यांगों सहित दीन-दलित और पीड़ित जनता के हितों के लिए सदा समर्पित भाव से काम करने वाली भाजपा की मजबूती में योगदान देने वाली पूर्व सांसद नवनीत रवि राणा केवल नेत्री नहीं बल्कि कार्यकर्ताओं के लिए बड़ी बहन, गरीबों के लिए सहयोग के लिए सदा तत्पर करने वाली होती हैं. उनके 6 अप्रैल को जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान परिवार की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. वे स्वस्थ रहें, उनकी सभी मनोकामनाएं माता रानी पूरी करें, यही कामना.

जिले के जनहितकारी और सर्वांगीण विकास के लिए लगातार प्रभावी प्रयास करने वाली पूर्व सांसद तथा नवनीत रवि राणा ने आज भी जनता के मुद्दों के लिए उतनी ही सक्रिय और प्रभावशाली भूमिका बनाए रखी है. पद से अधिक जिद, निरंतरता और जनसेवा की भावना को महत्व देते हुए वे नागरिकों को न्याय दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं. उनके जन्मदिन के अवसर पर सभी स्तरों से उन्हें शुभकामनाएं दी जा रही हैं.

सांसद के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने लोकसभा के माध्यम से राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर के कई मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाया. लोकसभा के मंच का रचनात्मक उपयोग करते हुए उन्होंने जनता की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार और परिणामकारी प्रयास किए तथा मिले अवसर का पूर्ण उपयोग किया. बचपन से ही संवेदनशील रहने वाली सौ. नवनीत रवि राणा संबंधों को अत्याधिक महत्व देती हैं. यही कारण है कि कार्यकर्ताओं के लिए कभी किसी तरह का समझौता नहीं करती हैं. जिले में विकास की गंगा बहाने के अलावा किसी पर भी अन्याय होने की जानकारी मिलने पर वे तत्काल न्याय दिलाने के काम में लग जाती हैं.

अमरावती जिले के विकास कार्यों में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है. हवाई अड्डा परियोजना, एमआईडीसी के अंतर्गत पीएम मित्रा टेक्सटाइल पार्क के लिए उनका लगातार किया गया प्रयास निर्णायक साबित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप माननीय प्रधानमंत्री के माध्यम से यह परियोजना अमरावती में स्वीकृत हुई. हाल ही में इस परियोजना की प्रगति की समीक्षा उच्चस्तरीय अधिकारियों की उपस्थिति में विधानसभा आश्वासन समिति के अध्यक्ष विधायक रवि राणा द्वारा की गई, जिससे उनके प्रयासों के सकारात्मक परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं.इसके अलावा केंद्रीय मार्ग निधि से सड़क विकास, विभिन्न तीर्थस्थलों के उन्नयन के लिए निधि उपलब्ध कराना तथा लगभग 1000 करोड़ रुपये की सिम्बोरा बांध आधारित अमरावती शहर जल आपूर्ति योजना के लिए उन्होंने लोकसभा में प्रभावी ढंग से आवाज उठाई. इस परियोजना के संबंध में उन्होंने सदन में मजबूती से अपनी बात रखते हुए संबंधित मंत्रियों से जवाब भी प्राप्त किया. वर्तमान में यह महत्वपूर्ण परियोजना प्रगति पर है और जल्द ही साकार होने की दिशा में अग्रसर है.

वृद्ध महिलाओं और पुरुषों के मानधन में वृद्धि, दिव्यांगजनों के लिए अनदान बढ़ाने, शिक्षा, छात्र कल्याण, केंद्रीय विद्यालय, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी विभिन्न योजनाओं पर भी उन्होंने निरंतर ध्यान केंद्रित किया. उनके प्रयासों से अनेक योजनाएं राज्य और केंद्र सरकार के माध्यम से प्रभावी रूप से लागू हो रही हैं, जिनका सीधा लाभ नागरिकों को मिल रहा है.

स्वास्थ्य क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें मेडिकल कॉलेज की स्थापना, भवन निर्माण के लिए निधि उपलब्ध कराना और विभिन्न स्वास्थ्य परियोजनाओं को प्रोत्साहन देना शामिल है. इससे जिले की स्वास्थ्य सेवाएं और अधिक सुदृढ़ हो रही हैं. साथ ही रेलवे से संबंधित समस्याओं को भी उन्होंने लोकसभा में प्रभावी ढंग से उठाकर उनके समाधान के लिए प्रयास किए, जिसके सकारात्मक परिणाम अब सामने आ रहे हैं.

सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही है, जिससे उन्हें जनमानस में विशेष सम्मान और व्यापक स्वीकार्यता मिली है. विशेष रूप से अमरावती जिले को राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है.इस प्रकार, पद पर न रहते हुए भी उनके कार्यों के प्रति जिद और ईमानदार प्रयास स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं. हाल ही में उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष से भेंट कर अमरावती जिले से जुड़े कई मुद्दों को उनके समक्ष प्रस्तुत किया. लोकसभा में भी सांसद के रूप में इस हिंदू शेरनी ने सदा राष्ट्र धर्म को निभाने के साथ ही जनता को केन्द्र में रखा. उनके जन्मदिन पर उन्हें विदर्भ स्वाभिमान की हार्दिक शुभकामनाएं, वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें और उनकी राजनीतिक मनोकांक्षाएं पूरी हों, यही कामना.

सौ. वीणा सुभाष दुबे,अमरावती.

बालकों के लिए खुश खबरी,शीघ्र ही ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर

17 से 21 अप्रैल तक नि:शुल्क शिविर

विदर्भ स्वाभिमान, 1 अप्रैल

अमरावती- गरीब बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दिलाने के साथ ही सदा मदद के लिए तत्पर रहने वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए वननेस मुक्तांगण तथा विदर्भ स्वाभिमान के संयुक्त तत्वावधान में शीघ्र ही संस्कार शिविर का आयोजन किया जाएगा. सहयोगियों द्वारा 9 सत्रों में अलग-अलग विशेषज्ञों के मार्गदर्शन का लाभ छात्रों को मिल सकेगा. चार दिवसीय यह शिविर पूरी तरह से नि:शुल्क और इसमें विशेषज्ञों द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा, योगा, अच्छी आदतें, नृत्य, खेल, कैरियर, अंग्रेजी स्पीकिंग और एआई तकनीकी पर छात्रों का मार्गदर्शन किया जाएगा. संस्था द्वारा हर साल गर्मी की छुट्टियों के दौरान नि:शुल्क गरीब बच्चों के लिए विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता है.

चार दिवसीय इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे. इस दौरान मानव धर्म, राष्ट्र धर्म सबसे बड़ा रहने के साथ ही बच्चों को मोबाइल से दूर रखने के साथ ही पढ़ाई के बारे में उनमें रूचित पैदा करने की दिशा में प्रयास किया जाएगा. शिविर में सीमित सीटें रहने के चलते इच्छुकों से अमित बनारसे तथा संस्था के पदाधिकारियों से संपर्क कर अपना पंजीयन कराने का आग्रह किया गया है. नौकरीपेशा युवाओं द्वारा संचालित संस्था द्वारा गरीब

वननेस मुक्तांगण और विदर्भ स्वाभिमान की संयुक्त सामाजिक पहल

छात्रों को मुफ्त कोचिंग, स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन, दफ्तर तथा शालोपयोगी वस्तुओं का वितरण भी समय-समय पर किया जाता है. संस्था में सभी युवाओं की टीम है, जो स्वयं नौकरी अथवा व्यवसाय करने के साथ ही सामाजिक दायित्व की भावना से सामाजिक उपक्रम लेते हैं.

बच्चे हैं देश का भविष्य

बच्चे किसी भी समाज और राष्ट्र का भविष्य होते हैं. उनका व्यक्तित्व, व्यवहार और सोच उनके बचपन में मिले संस्कारों पर ही आधारित होता है. इसलिए बच्चों को अच्छे संस्कार देना हर माता-पिता और समाज की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है.संस्कार केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि जीवन जीने की सही दिशा है. ये बच्चों को सही और गलत में अंतर समझने की क्षमता देते हैं. अच्छे संस्कारों से बच्चे विनम्र, जिम्मेदार और संवेदनशील बनते हैं. वे दूसरों का सम्मान करना, सच बोलना और ईमानदारी से जीवन जीना सीखते हैं.बच्चों के लिए पहला विद्यालय उनका परिवार होता है. माता-पिता का आचरण ही बच्चों के लिए सबसे बड़ा उदाहरण बनता है. यदि घर का वातावरण सकारात्मक, अनुशासित और प्रेमपूर्ण होगा, तो बच्चे भी वैसी ही आदतें अपनाएंगे. इसलिए माता-पिता को स्वयं आदर्श बनकर बच्चों को सही मार्ग दिखाना चाहिए.विद्यालय और समाज भी बच्चों के संस्कार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. अच्छे शिक्षक, सकारात्मक मित्र और स्वस्थ सामाजिक वातावरण बच्चों को सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं. सामाजिक तथा राष्ट्रीय दायित्व की भावना से बच्चों को संस्कारित करने की यह पहल शुरू की जा रही है. इसे सफल बनाने में योगदान का आग्रह किया गया है.

पद्मावती द्वारा श्रीहरी पर पथराव करना, ग्लानि होना

गतांक से जारी- श्रीनिवास ने पद्मावती की सखियों को देखकर इस रूप में कह 'हे वारिज लोचन ! स्नेह से मैं अपने कुल, गोत्र के बारे में आपक बताऊँगा. राजा की बेटी के साथ मेरे प्रेम को बताने से मैं आपको वि उपहार दूँगा.' ऐसा कहते फिर से कहा. 'मेरे कुल शीतांश (भकल), वशिष्ट गोत्र, पिता वसुदेव, माँ देवकी देवी, बल भद्र मेरा भई सुभद्रा देवी मेरी बहन, अर्जन मेरा साला, धर्मराजादि मेरे बंधु वर्ग है. श्रीनिवास के इस जवाब को सुनकर पद्मावती की सखियों ने हँसते ह कहा 'तम्हारा शरीर इतना काला क्यों है?' तब श्रीनिवास ने जवाब दिय 'कृष्ण पक्ष को आधी रात के समय माता-पिता से मैं पैदा हो गया इसलिए मेरा शरीर नीले रंग का हो गया है. इसलिए लोग मुझे कृष्ण का कर पुकारते हैं. अब मेरे कुल गोत्र के बारे में आपको पता चल गय न. इसलिए तुम्हारी कन्या के कुल, गोत्र आदि के बारे में मुझे में बताइए.' श्रीनिवास की बातें सुनकर सखियों ने कहा. 'चंद्र वंश का कुल, अत्रि गोत्र के राजा आकाशराज की पुत्री है यह, भूतल में बही हुई पद्मावती इसका नाम है. बचपन से हमारे साथ खेलते-कूदते बड़ी हुई है. हमें हमेशा सकल वस्तुओं को देखकर स्नेह के साथ हमारे साथ रहते है. यह सदा हम पर कृपा करती रहती है.' सखियों की इन बातों के सुनकर श्रीनिवास ने इस रूप में कहा. 'हे अँबुज लोचन ! तुम लोगों कृपा करनेवाली सुवासिनी का स्नेह प्राप्त करने के लिए मैं आया.बिना किसी संदेह के मेरे साथ प्रेम करने के लिए अभी अपनी सखि से डटकर कहिए.पद्मावती का श्रीनिवास से बहस करना-यह सुनकर पद्मावती ने शीघ्र ही अपनी सखियों को पास बुलाकर गुस्से में उन्हें डांटते हुए श्रीनिवास की तरफ देखकर इस रूप में कहा.

'हे निषादेंद्र ! शीघ्र ही तुम दूर चले जाओ!' यह सुनकर विष्णु ने इस रूप में कहा. 'हे ललितांगी! इस रूप में निष्ठुर क्यों हो रही हो! तुम प्रेम के साथ बात करो. उत्साह से कन्यापेक्षा से यहाँ आया हूँ. तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए मैं योग्य हूँ. पराया नहीं हूँ. कन्यादान करनेवाले तुम्हारे जनक राजा को अपार सुख प्राप्त होंगे. जब मैंने तुम्हें चाहा. तभी मुझे तुझे दान देना चाहिए. चंद्र वंशज मुझ से दूर रहने का संशय छोड़कर मेरे साथ विवाह कर लो.' इसे सुनकर पद्मावती ने कहा. 'तुम निषाद हो. मैं चंद्र वंशज की तनया हूँ. हे मूढात्मा! इस कारण से तुमको दूर जाने के लिए जानबूझ कर कहने पर भी तुम दूर नहीं जा रहे हो. झगड़ा न करके बुरी बातें न करके चले जाओ. अगर मेरे पिताजी तुम्हारी बातें सुनेंगे तो बंदी बनाकर तुझे पिटवायेंगे. उसके पहले ही तुम यहाँ से चले भी जाओ.' कहने से हरि ने इस रूप में कहा. 'न्याय और धर्म क्या है? मैं ब्र्ह्मचारी हूँ. तुम कन्या हो. इसलिए तुम्हारे साथ विवाह करना बड़ी धर्मसम्मत है. यह अधर्म नहीं है. इसलिए तुम मुझ पर दया करके निष्ठुर बातें न करके मेरे साथ विवाह कर लो.' कहते सुनकर पद्मावती ने भौंहें ती चढ़ाकर आंखें लाल करके चक्री को देखकर इस रूप में कहा. 'रे. हे निषाद ! तुम इस रूप में बातें न करके चले जाओ. अपने रास्ते चले जाओ.' कहते सुनकर हरि ने कहा. 'अपना बंधु समझकर तुम्हारे साथ हैं. प्रेम से बात कर रहा हूँ. दूसरे लोगों से मुझे मत पिटाओ. हे तरुणी!

सुनकर पद्मावती ने कहा-तुम इस रूप में मुझ पर पलाश के फूल फेंककर बार-बार मुझे गुस्सा करने के लिए विवश कर रहे हो. तुमको अगर पीटना है तो तुम्हीं मुझे पकड़ कर पीटो.' चक्री की इन बातों को बचकर रहना पसंद नहीं है क्या? छी! जाओ!' कहने से हँसते हुए हाँ ने इस रूप में कहा. 'पैदा होनेवाला मरना सत्य है. इसलिए फिर चिंता क्यों है? तुमसे मिलने के बाद जगत में रहना या मरना दोनों अच्छे हैं. रमणी! इसके लिए मुझे चिंता क्यों है? सुनो. वांछित कार्य पूरा होने के बाद तुम पकड़कर पीटो या डांटो. इससे मुझे कोई भय नहीं होगा. है नीरजाक्षी ! अब तुम शीघ्र ही मुझ पर दया करो.' कहते सुनकर पद्मावती ने इस रूप में कहा. मेरे पास इस रूप में बातें करना अगर आकाशराज को मालूम हो जायेगा तो तुमको इस लोक में रहने नहीं देंगे. हे कुमती! तुम्हें वह कष्ट क्यों? यहाँ से चले जाओ.' कहते सुन कर हरि ने कहा.पर मेरे भाग्य में जो लिखा हुआ है, उससे अलग कुछ नहीं होगा. तुम्हारे साथ परिणय करने के बाद मैं कहीं भी चला जाऊँ मेरे लिए कुशल ही होगा. हे मानिनी! इसलिए तुझे अपने गले में लिए बिना नहीं छोडूगा.पद्मावति के द्वारा हरि पर पथराव कराना-कहते पद्मावती के समीप पहुँचनेवाले श्रीनिवास को देखकर पद्मावती को बड़ा गुस्सा आया. अपनी आंखें लाल करके, श्रीहरि का धिक्कार करते हुए, सखियों की तरफ मुड़कर 'इस निषाद पर पथराव करो पद्मावती ने आज्ञा दी. तब पद्मावती की सखियाँ शीघ्र ही घोड़े पर सवार श्रीनिवास पर बड़ी मात्रा में पथराव करने लगीं. श्रीनिवास ने पथराव से अपने को बचाने की कोशिश की. पत्थर घोड़े पर लगे. घोड़ा घायल - होकर नीचे गिर गया. तब श्रीनिवास घोड़े को छोड़कर आश्चर्यचकित होकर अति वेग से आनेवाले पत्थरों से अपने को बचाते हुए, सर के बाल खुलने से चारों दिशाओं में बचने के लिए भागने लगे.

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा

विश्वास वाले भक्तों को हर पल होता है तिरूपति में अनुभव

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं.तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है.जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा.डिजिटल संस्करण

www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN /2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

जाहीर सुचना	10x2	500
जाहीर सुचना	15x2	1000
बच्चों का जन्मदिन	10x2	500
शादी की वर्षगांठ	10x2	500
नाम में बदल	10x2	500
गुमशुदा	10x2	400
श्रध्दांजलि	10x2	500
पुण्यस्मरण	15x2	1000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी, अमरावती

मो. 9423426199/ 8855019189

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

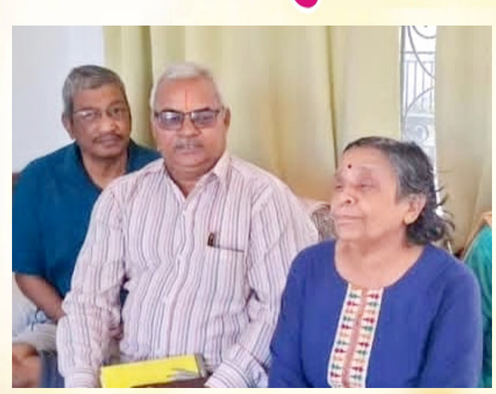

संघर्ष की राहों पर जो चलते जाते हैं,
वही इतिहास में अपना नाम लिखाते हैं।
ऐसे कर्मठ दीदी को जन्मदिन पर प्रणाम,
आपका भविष्य हो उज्ज्वल, बढ़े देश और
समाज का मान।

-शुभेच्छुक-

गौरी गणेश अय्यर मित्र परिवार, डॉ.शैला शिरीष देशपांडे नागपुर, पूज्य शिव गुरूजी शर्मा, सुदर्शन गांगजी तथा आनंद परिवार, विदर्भ स्वाभिमान मित्र परिवार महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात, ज्ञानशांति उपवन ओल्ड एज होम के सभी कर्मचारी तथा सहयोगी, बिपिन मिश्रा,सौ. मिश्रा तथा अनगिनत परिवार, अमरावती. नागपुर.

ममता,आत्मीयता, संवेदनशीलता से किसी के दिल में छाने वाली दीदी

आज स्वार्थ के दौर में बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जो लंबे समय तक बिना स्वार्थ के एक जैसा प्रेम, अपनापन और सदा साथ में खड़े रहने की बातें नहीं बल्कि सदा खड़े रहते हैं. ऐसे लोगों में शामिल हैं हमारी मुंहबोली बहन तथा अंध विद्यालय की सेवानिवृत्त प्राचार्य सौ.गौरी गणेश अय्यर. उनकी ममता की मूरत वाली आत्मीयता पाने का सौभाग्य मुझे मिला है. लाखों नेत्रहीन छात्रों का जीवन संवारने वाली दीदी की आत्मीयता किसी को भी बिना प्रभावित किए नहीं रहती है. उनका 1 अप्रैल को जन्मदिन था, उन्हें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं.आज के इस स्वार्थी और भागदौड़ भरे युग में जहां रिश्तों में औपचारिकता बढ़ती जा रही है, वहीं पिछले 20 वर्षों से मुंहबोली बहन के स्वभाव में कभी अंतर नहीं आया. पुत्रवत प्रेम, अपनापन और सम्मान के साथ ही कई बार अगर कुछ बात मैं छोटा होने के बाद भी बोल देता हूं तो वह स्वीकार कर लेती हैं. अपने व्यवहार, प्रेम और अपनत्व से अय्यर दम्पति हर मिलने वाले के दिल में विशेष स्थान बना लेते हैं. कई संगठनों की पदाधिकारी गौरी अय्यर आत्मीयता, संवेदनशीलता और सच्चे मानवीय मूल्यों की जीवंत मिसाल हैं.उनका व्यक्तित्व सादगी और सौम्यता से परिपूर्ण है. समस्याओं का रोना रोने की बजाय हर स्थिति से दो-दो हाथ करने वाली उनकी अदा लाखों लोगों के लिए प्रेरणादायी है. आंखों की रोशनी नहीं रहने के बाद भी दिल की रोशनी से सब कुछ करती हैं. उनके चेहरे की मुस्कान और विनम्रता हर किसी को सहज ही अपना बना लेता है. वे केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से रिश्तों को निभाने में विश्वास रखती हैं. चाहे परिवार हो, मित्र हों या समाज के लोग हर किसी के प्रति उनका व्यवहार समान रूप से स्नेहपूर्ण और सम्मानजनक रहता है. ज्ञानशांति उपवन में भी उनके कारण सदा रौनक रहने से कोई भी इंकार नहीं कर सकता है. हर दिन उन्हें कोई न कोई मिलने आना, इसका सबूत है. उनकी सबसे बड़ी विशेषता है उनकी आत्मीयता वह आत्मीयता जो बिना किसी स्वार्थ के लोगों को जोड़ती है. किसी की परेशानी में साथ खड़ा होना, बिना कहे किसी की भावनाओं को समझ लेना और हर परिस्थिति में सकारात्मकता बनाए रखना, ये गुण उन्हें भीड़ से अलग बनाते हैं.गौरी अय्यर न केवल एक अच्छी इंसान हैं, बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणास्त्रोत हैं. वह कहती हैं कि सच्ची खुशी दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने में है. वे हर रिश्ते को दिल से निभाती हैं और अपने आचरण से यह साबित करती हैं कि आत्मीयता ही सबसे बड़ा धन है.सचमच समाज के लिए अनमोल हैं. गौरी अय्यर जैसी आत्मीय और संवेदनशील व्यक्तित्व की उपस्थिति ही इस दुनिया को और भी खूबसूरत बनाती है.

डॉ.शैला शिरीष देशपांडे,
समाजसेवी, लेखिका,नागपुर

सात छोटे-छोटे द्वीपों से शुरू हुआ बाम्बे शहर

नई दिल्ली-मंबई, जिसे कभी बॉम्बे कहा जाता था आज 2 करोड़ से ज्यादा आबादी वाला महानगर है. लेकिन यह शहर हमेशा ऐसा नहीं था. सात छोटे-छोटे द्वीपों से शुरू होकर यह शहर समय के साथ बदलता गया. अब एक नई प्रदर्शनी 'बॉम्बे फ्रेम्ड' इसी बदलाव की पूरी कहानी तस्वीरों और कलाकृतियों के जरिए सामने लाती है.मंबई का इतिहास कई परतों से बना है, जिसमें कोली मछुआरों से लेकर अंग्रेजी हुकूमत के योजनाकार, कपड़ा मिल मालिक और फिल्मी सितारे तक शामिल हैं. इस शहर ने हर दौर में खुद को बदला है मछली पकड़ने के जाल से लेकर बड़े बंदरगाह, मिलों से लेकर मॉल तक इसका रूप लगातार बदलता रहा है.छोटे द्वीप से लेकर वर्तमान के महानगर तक बाम्बे का सफल सदा हैरत में डालने वाला रहा है.

बॉम्बे फ्रेम्ड' नाम की इस प्रदर्शनी में 300 साल की यात्रा को 100 से ज्यादा तस्वीरों, पेंटिंग्स और मल्टीमीडिया के जरिए दिखाया गया है. इसमें अमीर पारसी व्यापारियों और फिल्म सितारों से लेकर आम मजदूरों की जिंदगी तक हर पहलू को दिखाया गया है. प्रदर्शनी के क्यूरेटर ज्ञान प्रकाश के मताबिक, यह शहर खुद एक कला की तरह है जिसमें कई अनुभव और परतें एक साथ जुड़ी हैं.

मां कभी दूर नहीं जाती,वह धड़कन में बस जाती है

ज़ीवन में मां शब्द का कभी अंत नहीं हो सकता है. यही कारण है कि मां कभी हमें अलविदा नहीं कर सकती है. शारीरिक रूप से भले ही हमारे साथ नहीं रहती हैं लेकिन वे जहां भी रहती हैं, अपने बच्चों पर सदा आशीर्वाद की बारिश करती हैं. बडनेरा निवासी सुदर्शन गांग परिवार की आदर्श मां के रूप में श्रीमती सुगनबाईजी पुखराजजी गांग ने अपने आदर्श संस्कार, विचारों से जिस तरह से इस परिवार और आनंद परिवार को कामयाबी की बुलंदी, मानवता की सेवा में चरम पर पहुंचाया हैं, उन मातोश्री के तीसरे स्मृति दिवस पर उनके चरणों में शत-शत नमन करते हैं.वैसे भी मां कभी नहीं जाती है,वह तो बच्चों के दिल की धड़कन में सदा बस जाती है. मां यह शब्द अपने आप में ममता, त्याग, प्रेम और असीम आत्मीयता का सागर समेटे हए है. मां का साया जब तक हमारे सिर पर होता है, तब तक जीवन की हर कठिनाई भी आसान लगती है. लेकिन जब वही साया हमेशा के लिए दूर चला जाता है, तब उसकी कमी हर पल महसूस होती है. मां साहब की कमी आनंद परिवार को खलती है.मां के स्मृति दिवस पर केवल उनकी यादें ही नहीं, बल्कि उनके संस्कार, उनके दिए हुए जीवन मूल्यों और उनके त्याग की गहराई भी हमारे मन में जीवंत हो उठती है. उनकी मीठी डांट, स्नेह भरी बातें, और हर परिस्थिति में हमें संभालने का उनका तरीका आज भी हमारी राह को रोशन करता है.

मां ने हमें चलना सिखाया, गिरकर संभलना सिखाया, और जीवन के हर मोड़ पर मजबूत बनना सिखाया. उनका निस्वार्थ प्रेम ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है. आज भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी सीख, उनकी बातें और उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ है.मां की स्मृति दिवस पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके बताए मार्ग पर चलें, उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें और उनके सपनों को पूरा करने का प्रयास करें.

'मां कभी दूर नहीं जाती, वह तो हर धड़कन में बस जाती है 'ज़ीवन में जो आया है, उसका जाना तय होता है. जन्मदिन के तारीख पर ही विधाता के रजिस्टर में वापसी का दिन तय हो जाता है. लेकिन जीने की कला और जाने की कला दुनिया में जिस दिन सभी को पता चल जाएगी, असली मायने में उसी दिन से दुनिया ही स्वर्ग बन जाएगा. बडनेरा निवासी पूज्य श्रीमती सुगनबाईजी पुखराज गांग धार्मिकता से जहां ओतप्रोत महिला थीं, वहीं मां की ममता हर गरीब तथा घर आने वाले पर लुटाती थी. स्थितियों से जूझने का जहां एक ओर उनमें सदैव माद्दा रहा, वहीं दूसरी ओर पूरे परिवार को आदर्श संस्कार देने की भूमिका भी निभाई. आज आनंद परिवार अपार व्यवसाय के साथ ही

तृतीय स्मृति दिन पर आदर्श संस्कारों की जननी को विनम्र आदरांजली

सेवाभावना का केन्द्र बना है तो मुझे लगता है कि इसका पूरा श्रेय पूज्य मातोश्री को जाता है. जिन्होंने अपनी समझबूझ से जहां परिवार को संभाला वहीं परिवार के हर सदस्य के साथ ही बाहर से आने वाले हम मेहमान में नर में नारायण और नारी में नारायणी देखते ह ुए उसकी यथासंभव मदद करने वाली भावना सदैव रहती थी. परिवार में बेटों का प्रेम,बेटियों का प्रेम जहां है, वहीं दूसरी व्यवसाय के साथ ही समाजसेवा के क्षेत्र में आनंद परिवार का योगदान उनका कार्य अपार है. इसका पूरा श्रेय मातोश्री के संस्कारों को ही जाता है. आनंद परिवार द्वारा सामाजिक क्षेत्र में जिस तरह का योगदान सदैव दिया जाता है, मातोश्री की 4 अप्रैल को पुण्यतिथि पर आनंद परिवार,विदर्भ स्वाभिमान परिवार की विनम्र आंदरांजलि. आज वह भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं. लेकिन मातोश्री के आदर्श विचारों पर ही आज भी आनंद परिवार आगे बढ़कर समाज तथा राष्ट्र के कल्याण के कार्य में अपना योगदान दे रहा है.

13 अप्रैल 1932 में उनका जन्म हुआ था. बचपन से ही धार्मिकता से ओतप्रोत महिला थीं. साहसी के साथ ही किसी गरीब को लेकर उनका लगाव अलग ही था. उनके स्वभाव तथा अतिथि देवो भव की परम्परा का निर्वहन आज भी बेटे द्वारा किया जा रहा है. किसी व्यक्ति में भगवान देखने की इस परिवार की अदा ही हटकर है, यह कहना गलत नहीं होगा. जो लोग भी बडनेरा में सुदर्शन गांगजी के यहां जाते हैं, इसका सहजता से अनुभव करते हैं. तीन पीढ़ियों में एक साथ इस तरह की आत्मीयता आसान नही होती है. लेकिन यह भी उतना ही सही है कि जिस परिवार की संस्कार की डोर मां के हाथ होती है, उसमें निश्चित ही तरक्की होती है. आनंद परिवार सामाजिक,दिव्यांग कल्याण, वृद्धाश्रम के साथ ही सामाजिक कामों में अग्रणी है तो इसका पूरा श्रेय मां के संस्कारों को जाता है. मातोश्री श्रीमती सुगनबाईजी पुखराजजी गांव धार्मिकता से परिपूर्ण महिला थी. उनके ही आदर्श संस्कारों के कारण गांग परिवार न केवल बडनेरा सेवाभावना के लिए समूचे भारत में सुख्यात हुआ है. धार्मिकता से ओतप्रोत रहने वाली मां सुगनबाई को ममता की मूरत थी. बच्चों को भी उन्होंने वही आदर्श संस्कार दिए.उनके ही आदर्श संस्कारों , विचारों की विरासत समाजसेवी, सेवाभावी और जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहने वाले सुदर्शन के साथ ही सभी भाई सुगनचंद, धरमचंद, सुदर्शन, जवाहर, मनोज गांग के साथ ही आनंद परिवार को जिस तरह से विषम स्थितियों में भी उन्होंने संभाला और आज न केवल व्यवसाय बल्कि समाजसेवा के क्षेत्र में भी अग्रणी पहुंचाया, इससे उनकी महानता का अंदाजा लगाया जा सकता है.आए हैं तो जाएंगे,राजा रंक फकीर लेकिन मातोश्री की आत्मीयता, किसी से भेदभाव नहीं करने वाली अदा आज भी याद की जाती है. उनकी पुण्यतिथि पर आनंद परिवार द्वारा विभिन्न सामाजिक उपक्रम चलाए जाते हैं, अन्नदान, जरूरी साहित्य का वितरण, गौशाला में सेवा जैसे कार्यक्रम में तीन पीढ़ियों का उत्साह देखने लायक रहता है. आपकी दिव्य आत्मा को प्रभु अपने चरणों में स्थान दें, यही कामना.उनकी गांग परिवार पर कृपा आशिर्वाद सदा बना रहे, प्रभु चरणों में यही कामना, पावन स्मृति में नमन.

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क,अम.

गुरुवार २-८ अप्रैल २०२६ तक

मेष-राशि के जातकों के लिए यह हफ्ता इमोशनल गहराई से शुरू हो रहा है. आपके राशि स्वामी मंगलदेव अभी कुंभ में हैं, लेकिन शुक्र का 2 मार्च को मीन राशि में उच्च होना आपके 12वें घर को प्रभावित करेगा. इससे आपके रिश्तों में दया और संवाद में नरमी आएगी. चंद्रदेव सिंह राशि में रहेंगे, जो आपके कॉन्फिडेंस और क्रिएटिविटी को बूस्ट करेंगे. चंद्रदेव तुला राशि में आने से पार्टनरशिप और इमोशनल बैलेंस पर फोकस बढ़ेगा.

वृषभ-राशि के लिए हफ्ता खुशनुमा रहेगा क्योंकि 2 मार्च को शुक्र आपके ग्यारहवें घर यानी मीन राशि में उच्च के हो रहे हैं. वह दोस्ती, उम्मीदों और इमोशनल सपोर्ट को मजबूत करेंगे. चंद्रदेव सिंह राशि में होने से फैमिली मैटर्स और कम्फर्ट को हाईलाइट करेंगे.आपकी क्रिएटिविटी और रोमांस को सपोर्ट करेंगे. मिथुन में बृहस्पति रेट्रोग्रेड होने के कारण अपने फाइनेंस को ध्यान से रिव्यू कर सकेंगे वैसे इस हफ्ते आप चतुर बुद्धि का भी खूब प्रयोग करेंगे.

कर्क-मिथुन राशि के जातकों के लिए फरवरी महीने का यह सप्ताह उम्मीद की नई रोशनी लाएगा लेकिन शुरुआत में आपको कुछ मानसिक थकान और तनाव का सामना करना पड़ सकता है. कार्यक्षेत्र में आपके कुछ नया बदलाव दिखेगा जो आपको परेशान तो करेगा लेकिन बहुत कुछ सीखने का भी मौका देगा. आपको इस समय अवसर पर नजर बनाए रखने की जरूरत रहेगी. वैसे आपको जीवनसाथी से पूरा सहयोग मिलेगा.

सिंह-कर्क राशि के जातकों के लिए फरवरी महीने का यह सप्ताह आरंभ में मानसिक उलझन भरा रहने वाला है. राशि स्वामी चंद्रमा सिंह राशि में केतु के साथ यति संबंध बनाएंगे. ऐसे में आपको जोखिम लेने से बचना चाहिए, चोट लगने की आशंका रहेगी और कुछ गलत निर्णय की वजह से मानसिक तनाव भी मिल सकता है. जो जातक तकनीकी कार्य से जुड़े हुए हैं उनको अपनी तकनीकी क्षमता का लाभ मिलेगा.

कन्या-सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित रहने वाला है. सप्ताह के पहले भाग में आपको अधिकारियों से वाद विवाद में उलझने से बचना होगा साथ ही आपको विरोधियो और शत्रुओं से भी सतर्क रहना होगा. सरकारी क्षेत्र का कोई काम फंसा है तो आपको किसी अनुभवी व्यक्ति की मदद से फायदा हो सकता है.

तुला-कन्या राशि के जातकों के लिए फरवरी का पहला सप्ताह सामान्य रूप से अच्छा रहेगा. वैसे इस हफ्ते आपकी सफलता में आपकी चतुर बुद्धि का बड़ा हाथ होगा. आप परंपरा से हटकर कुछ नया आजमाने का प्रयास कर सकते हैं. इस हफ्ते के आरंभ में ही राशि स्वामी बुध राहु से युति बनाएंगे ऐसे में आप उन क्षेत्रों से भी लाभ का अवसर निकालने में कामयाब होंगे जहां से काम बनने की उम्मीद कम होगी और इसके लिए आप उंगली टेढ़ी भी कर सकते हैं.

वृश्चिक-तुला राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह सुखद और अनुकूल रहेगा. बीमार चल रहे जातकों की सेहत में सुधार होगा. आप सप्ताह के आरंभ से ही सक्रिय और सजग नजर आएंगे. आपको अपने अनुभव और कार्यकुशलता का लाभ मिलेगा. आपकी कोई अटकी योजना पूरी होगी. लव लाइफ में प्रेम और आपसी सामंजस्य बना रहेगा. कोई मित्र आपकी मदद भी कर सकता है. संतान सं संबंधित आपकी किसी चिंता का समाधान होगा.

धनु-गुस्से से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विनयशीलता और प्रेम से काम लेने का प्रयास करें. वाहनादि धीरे से चलाएं. परिवार में किसी के साथ मनमुटाव से बचें . आपका भाग्य चमक सकता है.

मकर-घर के बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें. समय रहते कदम उठाना उचित रहेगा. अपनों से विवाद टालें. ठंड बढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो सकती है. संबंधों पर विशेष ध्यान दें.

कुंभ-मार्च महीने का यह पहला सप्ताह लाभ का संयोग बना रहा है. इस हफ्ते राशि से दसवें भाव में मंगल का गोचर होना आपके करियर और कारोबार के लिए शुभ रहने वाला है. आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ भी प्राप्त होगा. नौकरी में आपका प्रभाव और सम्मान बढेगा. सप्ताह के आरंभ में थोड़ी अधिक व्यस्तता रहेगी लेकिन सप्ताह मध्य का समय आपके लिए रिलैक्स करने वाला वाला रहेगा.

मीन-मीन राशि के लिए यह हफ्ता बहत ही पावरफुल और शुभ है. 2 मार्च को शुक्र आपकी ही राशि यानी फर्स्ट हाउस में उच्च के हो रहे हैं, जो आपके चार्म, क्रिएटिविटी और इमोशनल वार्मथ को बढ़ाएंगे. चंद्रदेव कन्या राशि में आने से पार्टनरशिप और रिश्ते हाइलाइट होंगे. 6 मार्च की रात से चंद्रदेव तुला राशि में जाने से इमोशनल हीलिंग में मदद मिलेगी.

महिलाओं की अपार चहेती भाजपा नेत्री हैं सौ.नवनीत राणा

अमरावती- जिले का यह सौभाग्य है कि हमारे जिले को अभिनेत्री रहने के बाद भी गर्व से कोसों दूर रहने वाली, गरीबों, जरूरतमंदों, आदिवासियों के साथ ही हर गरीब तबके के लिए जननायक की भूमिका निभाने वाली भाजपा को मजबूती प्रदान के लिए पूरी तरह से समर्पित नेत्री हैं. पूर्व सांसद रहने के बाद भी आज भी वह जहां जाती हैं, लोग उमड़ पड़ते हैं, यह उनकी लोकप्रियता का सबूत है. पूर्व सांसद नवनीत राणा जिले की पहली ऐसी नेत्री हैं, जिन्हें मेल्घाट के आदिवासी मेलघाट पुत्री के रूप में अपार सम्मान देते हैं. उनके जन्मदिन पर हमारी करोड़ों शुभकामनाएं.

लोग आज भी खुले दिल से स्वीकार करते हैं कि उनके जैसी डैशिंग सांसद अमरावती को विकास में सबसे आगे ले जाता था. लेकिन जिला आज विकास में पिछड़ गया है. वे मानते हैं कि अमरावती विकास में पांच साल पीछे चला गया है. वक्तृत्व कला के साथ ही नवनीत राणा जनता के हर वर्ग की समस्यओं को समझने तथा उनका निराकरण करने के लिए सदैव तत्पर रहती थीं.

पूर्व सांसद के बाद भी आज भी जिले की समस्याओं को लेकर वैसे ही सक्रिय हैं. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह सहित दिग्गज नेताओं के साथ उनके संबंध और जिले के विकास के लिए जिस तरह से उन्होंने स्वयं को झोंका है, वह अपने आप में अनूठा है. जिले के विकास के लिए वे जहां प्रयासरत रहती हैं, वहीं दूसरी ओर गरीबों, दीन-दलितों पीड़ितों पर होने वाले अन्याय के लिए वे आक्रामक हो जाती हैं. हनुमान चालीसा के मामले में तत्कालीन सरकार से पंगा लेने का काम केवल उनके जैसी जिगरबाज नेत्री ही कर सकती है. संसद में जिस तरह से वे जनता की समस्याओं को मुखरता से रखती थीं, उसे देखकर किसी को यह नहीं लगता है कि चकाचौंध की दुनिया से एकदम राजनीति में प्रवेश करने और दूसरे ही चुनाव में लाखों की आबादी का प्रतिनिधि बनने वाली सांसद सौ. नवनीत रवि राणा नई साबित हुई. हर विषय पर गहन अध्ययन के साथ कई भाषाओं का ज्ञान जहां उन्हें भीड़ में भी अलग स्थान देता है, वहीं उनकी सादगी का दर्शन नवरात्रोत्सव के दौरान अमरावती जिले ने जनता हमेशा ही करती है. बिना जाति-धर्म का भेदभाव किए उनका मानना है कि दुनिया में केवल मानव धर्म आवश्यक है. जिले की वीवीआईपी रहने वाली सांसद नवनीत राणा झोपड़पट्टियों में भी दुर्गा मंडलों में वहां की महिलाओं के साथ भक्तिभाव से गरबा करने में कभी संकोच नहीं करती. उनके जन्मदिनपर विदर्भ स्वाभिमान महिला मंच की हार्दिक शुभकामनाएं.

सौ. भावना रा. बनारसे,अम.

जयश्रीराम की घोषणाओं से गूंजी अंबानगरी

हनुमान जन्मोत्सव पर कांग्रेस ने निकाली शोभायात्रा, हजारों लेंगे गुरूवार को महाप्रसाद का लाभ

विदर्भ स्वाभिमान, 1 अप्रैल

अमरावती- शहर के साथ ही जिले में श्रीराम नवमी के बाद हनुमान जन्मोत्सव को लेकर पूरा शहर श्रीराममय हो गया है. इस उपलक्ष में रविनगर के साथ ही सैकड़ों हनुमान मंदिरों में जहां भजन संध्या, संगीतमय सुंदरकांड का आयोजन किया गया है, वहीं दूसरी ओर युवक कांग्रेस द्वारा बुधवारा से निकाली गई शोभायात्रा न केवल जिले में बल्कि समूचे विदर्भ में चर्चा का विषय बन गई थी. इसमें हजारों भक्तों ने भाग लिया. गज के साथ ही गाजे-बाजे के साथ यह शोभायात्रा निकली, इसमें हजारों की संख्या में भाविक शामिल हुए. 2 अप्रैल को भी हनुमान मंदिरों में भी हजारों भक्तों के उमड़ने की संभावना है. कहीं सुंदरकांड, कहीं भजन, रविनगर के हनुमान चालीसा पाठ में चार हजार से अधिक महिलाओं ने भाग लिया. लाखों की संख्या में भक्तों द्वारा हनुमान जन्मोत्सव पर महाप्रसाद का लाभ लिया जाएगा.

धन्वंतरी नगर में जन्मोत्सव

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी धनवंतरी नगर परिसर स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर में श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर सुंदरकांड व महाप्रसाद का आयोजन किया जा रहा है. जिसके तहत आज 1 अप्रैल को रात 9 बजे से संकट मोचन हनुमान मंदिर में सुंदरकांड का संगीतमय पाठ होगा तथा कल 2 अप्रैल को सुबह अभिषेक, पूजन व महाआरती पश्चात शाम 6 बजे से महाप्रसाद वितरित किया जाएगा.उक्ताशय की जानकारी देते हुए संकट मोचन हनुमान मंदिर की व्यवस्थापन समिति के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सभी भाविक श्रद्धालुओं से इस अवसर पर बडी संख्या में उपस्थित रहकर सभी आयोजनों का आनंद व लाभ लेने का आवाहन किया गया है.

रविनगर तथा वल्लभ नगर में भी

हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में रविनगर के संकटमोचन मंदिर में हनुमान चालीसा पाठ किया गया. इसमें चार हजार से अधिक महिलाओं ने भाग लिया. पिछले दस दिनों से यहां पर भव्य उत्साह तथा भक्तिभाव का माहौल रहा. भजन संध्यान के साथ ही यहां के महाप्रसाद का लाभ हजारों की संख्या में भक्त उठाते हैं. इसी तरह वल्लभ नगर के हनुमान युवक मंडल द्वारा संचालित हनुमान मंदिर में भी दो दिवसीय हनुमान जन्मोत्सव महोत्सव आयोजित किया गया है. इसकी शुरूवात 1 अप्रैल को अभिषेक, पूजा-अर्चना के साथ ही विभिन्न कार्यक्रमों से हो गई है. भक्तों ने पहले ही दिन हजारों की संख्या में पहुंचकर संकटमोचन का दर्शन कर पुण्यलाभ प्राप्त किया.

वल्लभ नगर में गुरूवार 2 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव पर धार्मिक कार्यक्रमों के साथ ही भव्य महाप्रसाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया है. इसका भक्तों से लाभ लेने का आग्रह राजेश सोलव सहित सभी सेवाधारियों ने किया है. चांगापुर, श्रीक्षेत्र जहांगीरपुर में भी हजारों भक्त दर्शनार्थ उमड़ने वाले हैं. पांच दर्जन से अधिक मंदिरों में गुरूवार को महाप्रसाद कार्यक्रम रखा गया है. चांगापुर में सवा लाख से अधिक भक्तों द्वारा हनुमानजी का दर्शन करने तथा महाप्रसाद का लाभ लेने की संभावना जताई जा रही है.

प्रा. शुभांगी क्षितिज अभ्यंकर को पीएचडी

विदर्भ स्वाभिमान, 1 अप्रैल

अमरावती- प्रा. शुभांगी क्षितिज अभ्यंकर को संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय द्वारा समाजशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा. उनका शोध विषय पश्चिम विदर्भ की उच्च माध्यमिक छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उसके शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव रहा, जिसके लिए उन्हें डॉ. मंगला डी. तांबेकर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.इस उपलब्धि के साथ अब उनके नाम के साथ डॉ. की उपाधि जुड़ जाएगी. वर्तमान में वे राहुल व्यायाम प्रसारक मंडल, अमरावती की संचालिका हैं.अपनी सफलता का श्रेय उन्होंने अपने परिवार को देते हुए विशेष रूप से अपने ससुर मधुकरराव अभ्यंकर और पति क्षितिज अभ्यंकर के मार्गदर्शन व सहयोग को समर्पित किया.उनकी इस उपलब्धि पर विभिन्न क्षेत्र के मान्यवरों ने उन्हें शुभकामनाएं दी हैं. उच्च विद्याविभूषित प्रा.शुभांगी ताई की सर्वत्र सराहना कर अभिनंदन किया जा रहा है. उनका कई स्थानों पर सत्कार किया गया.

आचार, विचार, संस्कारों के साथ ही संयुक्त परिवार, मानवता और भारतीयता को समर्पित सर्वाधिक लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र के ग्राहक बनकर अच्छाई को बढ़ावा देने में अपना हाथ बंटाए, आज ही सदस्यता फार्म भरें

विदर्भ स्वाभिमान

संपर्क

9423426199/8855019189

प्रेम में त्याग का सर्वोच्च है तमाच्या तळाशी दिवे लागले

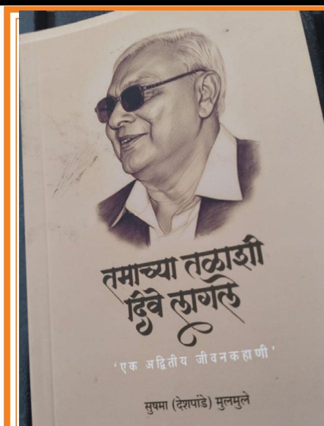

पुस्तक समीक्षा भाग-2

सुभाषचंद्र जे.दुबे
संपादक,विदर्भ स्वाभिमान
9423426199/8855019189
www.vidarbhwabhiman.com

किसी भी रिश्ते में सच्चाई और ईमानदारी उस रिश्ते को खुशनुमा बनाने का कार्य करती है. प्रेम का सही मतलब एक-दूसरे को जिस रूप में हैं, उसी रूप में स्वीकार करना होता है. **तमाच्या तळासी दिवे लागले** किताब में डॉ. शैला देशपांडे और और नेत्रहीन एड. शिरीष देशपांडे का आदर्श प्रेम यहां एक-दूसरे को निश्चिंतता प्रदान करता है, वहीं विवाह के बाद रहन-सहन में तमाम विरोधाभास उत्तर-दक्षिण ध्रुव रहने के बाद भी डॉ.शैला देशपांडे ने पति के माता-पिता के अलावा किस तरह से सभी रिश्तों को न केवल निभाने का प्रयास किया बल्कि उच्च विद्या विभूषित होने के बावजूद बाहर से तैयार होकर आने के बाद घर के बर्तन मांजने में संकोच नहीं कर आदर्श संस्कार का परिचय कराया. यह इस बात का सबूत है कि परिवार में अगर हर सदस्य एक दूसरे के सुख के साथ दर्द को समझने का प्रयास करें तो निश्चित तौर पर पूरा परिवार स्वर्ग सा आनंद का स्थान बन जाता है. किताब के कई प्रसंग ऐसे हैं जिसमें पहली मुलाकात के बाद दोनों ने जिस तरह से एक-दूसरे को समझने का प्रयास किया उसमें दिव्यांगता कभी बाधा नहीं बनी.

बचपन से स्पष्ट रवैया जहां शैला की खूबी रही है, यही कारण है वट की पूजा से इंकार के बाद सास को नाराजी हुई लेकिन उनकी बात सुनकर पति ने साथ दिया. पति एड. शिरीष ने भी कई मामलों में परिवार के साथ उनके विचार नहीं मिलने के बावजूद पत्नी के पक्ष में मजबूती से खड़े हुए. इससे यह साबित होता है कि किसी भी घर में किसी भी महिला पर अन्य तब तक नहीं हो सकता जब तक उसका जीवन साथी उसके कंधे से कंधा मिला कर खड़ा रहे. किताब में वर्तमान में जिस तरह प्रेम का दिखावा किया जा रहा है, जितने जल्दी फेसबुक पर मित्र बनते हैं, उससे ज्यादा जल्दी ठगे जाते हैं और कई बार तो प्रेम के नाम पर कुछ दिन में शादी हो जाती है और जितनी जल्दी शादी होती है, उससे भी जल्दी शादी टूट जाती है और पति-पत्नी जिंदगी भर घोर दुख में जीने के लिए विवश हो जाते हैं. किताब की लेखिका सुषमा देशपांडे मूलमुले ने जहां हर रिश्ते को मर्यादा के बंधन में बांधने में सफलता हासिल की वहीं शैला की बहनें हो अथवा शिरीष के माता-पिता या फिर छोटा भाई क्यों ना हो इस परिवार में जिस तरह से एक दूसरे का ध्यान रखते हैं, जहां एकता, वहीं खुशी और ताकत का संदेश देने में यह किताब सफल हुई है.

वर्तमान दौर में यह किसी फिल्मी कहानी के जैसी लगती है. बेटियां क्या नहीं कर सकती, इसका उदाहरण भी यह किताब है. शैला की चारों बहनों में जिस तरह का अपार प्रेम है और पूरा परिवार नंदनवन जैसा खुशियां मनाता है, वह इस बात का सबूत है कि अगर हम अपने अहंकार और विनम्रता को साथ रखें, भावना को प्रेम में बदलने का प्रयास करें तो निश्चित तौर पर टूटे बिखरे रिश्ते भी एकजुट होने में समय नहीं लगता है.

वर्तमान दौर में जहां हम दिखावे में मरे जा रहे हैं, फिर भले कितना ही कर्ज बजरी क्यों ना हो जाए लेकिन जिस तरह से दोनों का विवाह हुआ और कोर्ट मैरिज होने के बाद जिस तरह से अतिथियों का स्वागत सत्कार किया गया, आज के दौर में यह भी सीखने लायक है. पति-पत्नी के बीच अगर समझदारी रहे तो ऐसी कोई समस्या नहीं है जो कभी दोनों को मानसिक रूप से परेशान कर सके. इस बात को डॉ. शैला देशपांडे ने स्पष्टता के साथ स्वीकार किया है. उनके मुताबिक दो विचारों को एक करने का कार्य उन्होंने और एड शिरीष ने किया.वह जहां बचपन से अनुशासन में पली बढ़ी उच्च शिक्षित बेटी है वहीं दूसरी ओर पति शिरीष देशपांडे का परिवार खुशमिजाज और समय के मामले में उतना पाबंद नहीं रहने के बावजूद पति जब कहता है कि तुम तुम्हारी रूटीन के मुताबिक अपनी जिम्मेदारियां निभाओ, ऐसे में निश्चित तौर पर एक पत्नी के रूप में उन्हें अपार खुशी होती है. प्रेम का दूसरा रूप त्याग होता है लेकिन आज स्वार्थ के इस दौर में आपसी रिश्ते भी स्वार्थ की बलिवेदी पर चढ़ने के बाद निश्चित तौर पर परिवार की खुशियां गायब हो रही है. हमारा अहंकार, स्वयं को बड़ा समझने की गलती और नहीं समझने के बाद भी खुद को समझदार बताने की नकली चाहत आधे से ज्यादा परिवारों की खुशियों का दुश्मन बन गई है.

इस किताब में छोटे-छोटे चैप्टर के माध्यम से लेखिका ने बड़ी संदेश देने में कामयाबी हासिल की है. एक बार नहीं बल्कि कई बार पढने के बाद भी कभी उत्सुकता खत्म नहीं होती है. समझदारी के साथ इसे पढ़ने वाला व्यक्ति इसे कितने भी बार पढ़े इसकी रोचकता कहीं खत्म नहीं होती है.लेखिका ने सभी रिश्तों को जहां उनके समर्पण और सकारात्मक सोच के चलते महत्वपूर्ण दहलीज पर पहुंचाया है, वहीं छोटे-छोटे प्रसंगों को बेहतरीन संदेश का माध्यम बनाया.दूसरी ओर मायके से जाने के बाद ससुराल में जिस तरह से डॉ.शैला ने पति की अपेक्षाओं के साथ अपने कार्यों से शिरीष की मां को निश्चिंत किया, पहले ही मुलाकात के दौरान जिस तरह से भावी पति का ध्यान रखा, बहू को ऐसा करते देख कर सास ने इस समय यह कहना कि अब मां की कमी की चिंता मेरी मिट गई है, निश्चित तौर पर बहू के बेहतरीन संस्कार और भरोसे का परिचायक कहना गलत नहीं होगा. लेखिका सुषमाताई की इस बात के लिए भी सराहना की जानी चाहिए कि पहली बार जब शिरीष के घर उनके कमरे में गॉगल निकाल कर उनसे आंखें दिखाने का आग्रह भावी पत्नी शैला ने किया और बिना किसी तरह के लाग लपेट के शिरीष द्वारा गागल निकालने के बाद पहली बार उनकी आंखों पर जिस तरह का स्पर्श पत्नी के रूप में शैला ने किया, लगभग 32 वर्षों तक आदर्श दांपत्य जीवन निभाने के बाद आखिरी बार जब उन्होंने आंख पर स्पर्श किया, इन दोनों स्पर्श के बीच के अंतर को जिस तरह से लेखिका ने शब्दों के रूप में प्रस्तुत किया है, इन दोनों प्रसंग को पढ़ने के बाद किसी की भी आंखें नम हुए बगैर नहीं रहती.यह लेखिका के शब्दों की ताकत नहीं तो और क्या कहा जा सकता है. वर्तमान युवा पीढ़ी को अगर प्रेम का सही रूप समझना है तो निश्चित तौर पर **तमाच्या तळासी दिवे लागले** इस किताब का एक बार अध्ययन करें. यह किताब कथा कहानी नहीं है बल्कि त्यागी डा. शैला देशपांडे और जाने-माने अधिवक्ता शिरीष देशपांडे की अमर प्रेम गाथा कहना गलत नहीं होगा. 15 फरवरी 1989 को शुरू हुआ इस नवदंपति का सहप्रवास 10 फरवरी 2021 को भले ही खत्म हो गया लेकिन आज भी डॉ. शैला देशपांडे पति की सारी इच्छाओं को साकार करने में समर्पित होकर प्रयास कर रही हैं. 32 वर्ष का यह दांपत्य जीवन अभूतपूर्व खुशियों और एक दूसरे को समझने का सबसे बड़ा उदाहरण बन गया है. बेहतरीन किताब के रूप में **तमाच्या तळासी दिवे लागले** का जिक्र किया जा सकता है.अद्भुत संवेदनशीलता की परिचायक यह किताब है.

विक्की शर्मा के प्रयासों से जवाहर गेट परकोट को मनपा से मिली मंजूरी

विदर्भ स्वाभिमान, 1 अप्रैल

अमरावती-शहर के ऐतिहासिक और प्रमुख स्थल जवाहर गेट परकोट के सौंदर्यीकरण को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा अमरावती शहर जिल्हा के अध्यक्ष विजय उर्फ विक्की शर्मा के प्रयास सफल रहे हैं. उनके द्वारा किए गए ज्ञापन पर पालकमंत्री की पहल से उक्त कार्य को मनपा की मंजूरी मिल गई है. इसके लिए विक्की शर्मा की सराहना की जा रही है. महानगर पालिका ने इस महत्वपूर्ण कार्य को मंजूरी प्रदान कर दी है.

प्राप्त जानकारी के अनुसार जवाहर गेट अमरावती शहर की एक ऐतिहासिक धरोहर होने के साथ-साथ व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र है. परिसर में बढ़ती भीड़ और आवश्यक सुविधाओं के अभाव को देखते हुए इसके सौंदर्यीकरण और स्वच्छता की मांग लंबे समय से की जा रही थी.विक्की शर्मा द्वारा संबंधित

पालकमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले का जताया आभार

विभाग एवं पूरा मनपा आयुक्त मा. सचिन कालांत्रे साहेब को दिया गया था लेकिन उसको मंजूरी मनका आयुक्त मा.सौ सौम्य शर्मा चांदक को पत्र के माध्यम से इस विषय को गंभीरता से उठाया गया था. पत्र में उल्लेख किया गया था कि ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और उनके आसपास के क्षेत्र का विकास करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है. साथ ही, इस परिसर को स्वच्छ, सुंदर और आकर्षक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया.

महानगर पालिका द्वारा इस प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद अब जल्द ही सौंदर्यीकरण का कार्य शुरू होने की उम्मीद जताई जा रही है. इस निर्णय से स्थानीय नागरिकों और व्यापारियों में खुशी की लहर है.इस अवसर पर विक्की शर्मा ने चंद्रशेखर जी बावनकुले साहेब का आभार व्यक्त किया उस ही के साथ महापौर श्रीचन्द्र तेजवानी, उपमहापौर सचिन भेंडे,सभापति अविनाश जी मारडीकर का व सभी स्थायी समिति सदस्य का भी आभार व्यक्त किया और विक्की शर्मा ने कहा कि उनके सहयोग और मार्गदर्शन से ही यह कार्य संभव हो पाया है. उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में भी शहर के विकास कार्यों को इसी तरह गति मिलती रहेगी.

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

सन् 1967 पासून

अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट

संजय एजंसीज्

टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन 2564125,2674048

आचार, विचार, संस्कारों के साथ ही संयुक्त परिवार, मानवता और भारतीयता को समर्पित सर्वाधिक लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र के ग्राहक बनकर अच्छाई को बढ़ावा देने में अपना हाथ बंटाए, आज ही सदस्यता फार्म भरें. मानवता की सेवा तथा राष्ट्रधर्म को समर्पित तथा पूरी तरह से सकारात्मक खबरों को महत्व देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को मदद तथा आपके विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए संपर्क कर सकते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान

संपर्क
9423426199/8855019189